Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

मुगलकालीन शासन के भारतीय समाज पर प्रभाव

Dr. Meena Ambesh*

Associate Professor, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश – *मुगल साम्राज्य का भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। यह युग मुख्य रूप से 1526-1707 का है। इस युग में, बाबर, हुमायूँ अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब जैसे शासक थे। इस युग में कई क्षेत्रों में बड़ा विकास हुआ। कुछ क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। विदेशी देशों के साथ संपर्क, आंतरिक शांति की स्थापना, समान केंद्रीय शासन, ललित कलाओं की उन्नति, ऐतिहासिक साहित्य की उन्नति, फारसी उर्दू साहित्य का विकास, मार्शल आर्ट और सांस्कृतिक जीवन का कलात्मक वैभव, मुगल सभ्यता और संस्कृति का एक अनूठा उपहार है।*

मुख्य शब्द – *मुगल शासन, मुगलकाल का समाज पर प्रभाव, मुगलकाल में आर्थिक स्थिति, मुगलकाल में धार्मिक स्थिति, मुगलकाल में शिक्षा और साहित्य का विकास, मुगलकाल में कला और संस्कृति का विकास।*

----------X----------

प्रस्तावना

मुगल समाज को दो वर्गों में विभाजित किया गया था . अमीर और जनता जैसे किसान, कारीगर और मजदूर आदि। उच्च वर्ग के लोग ज्यादातर मनसबदार, जागीरदार और जमींदार और सरकारी अधिकारी होते थे। ये लोग बहुत अधिक विपुलता और विलासिता के जीवन जीते थे। हजारों महिलाएं राजाओं और राज्य के बुजुर्गों के हरम में रहती थीं- रखैल, रखैल और नौकरानी के रूप में। अकबर के हरम में लगभग पाँच हज़ार महिलाएँ थीं, ऐसी ही स्थिति अन्य बाड़ाशाह के लिए भी थी। हिंदू राजा मानसिंह के हरम में 1500 महिलाएं थीं। मुगल सम्राटों में औरंगजेब एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो अपनी पत्नी के लिए समर्पित था, इसके अलावा वह शराब और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करता था। हुमायूँ को अफीम का बहुत शौक था। इसी तरह, जहाँगीर हमेशा शराब में डूबा रहता था। उनकी इस आदत के कारण उनकी पत्नी मान बाई ने आत्महत्या कर ली। बाबर ने अपनी आत्मकथा (तुजुक-ए-बाबरी) में आम लोगों का वर्णन करते हुए कहा है कि यहाँ के किसान और निम्न वर्ग के लोग लगभग नग्न थे। बाबरनामा की पुष्टि करते हुए, राल्फ़ फ़ (जो अकबर के समय आया था) ने कहा है कि बनारस में पुरुष कमर में एक छोटे कपड़े को छोड़कर नंगे रहते थे। भूमिहीन किसान और मजदूर मनुष्यों के उस वर्ग के थे, जिन्हें अछूत या कमीने माना जाता था। मुगल समाज में कई सामाजिक बुराइयाँ प्रचलित थीं, जैसे कि पुरदाह, बाल विवाह पर रोक, बहु-विवाह और दहेज आदि। हालाँकि अकबर ने इन बुराइयों को रोकने की कोशिश की। मुगल काल के दौरान, कुछ महानुभावों ने सम्मानित किया था, जैसे कि अकबर की धर्मपत्नी, महाम अनागा, ने 1560.62 तक पेटीकोट.सरकार चलाई और राज्य की सर्वेक्षक बनी रहीं। इसी तरह, अकबर ने काबुल को जीत लिया और अपने चचेरे भाई बख्तुनिसा को अपना शासन दे दिया। जहाँगीर के शासन में नूरजहाँ एक समान भागीदार था। मुगल एडिट्स पर भी हस्ताक्षर किए गए थे। वह जहाँगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। और उसका नाम भी राज्य के सिक्कों पर अंकित था। औरंगजेब ने 1660 ई। में अपनी बड़ी बहन जहाँआरा को दिया। शाहजहाँ की मृत्यु के बाद, उसने बड़े सम्मान के साथ साम्राज्य की पहली महिला के रूप में अपना पद वापस कर दिया। अकबर और तत्कालीन मराठा सरदारों ने भी दहेज प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया। इसी प्रकार, महाराष्ट्र के गैर-ब्राह्मणों और पंजाब और यमुना घाटी के जाटों में विधवा.पुनर्विवाह प्रचलित था। नूरजहाँ की माँ अस्मत.बेगम ने इत्र बनाने की विधि का आविष्कार किया। नूरजहाँ और मुमताज़ महल ने कई सौंदर्य प्रसाधनों और गहनों में दिलचस्प बदलाव किए थे।

उद्देश्य

1. मुगलकाल की शासन व्यवस्था का अध्ययन किया गया है

www.ignited.in

2. मुगलकाल के सामाजिक प्रभावों की विवेचना की गई है

3. मुगलकालीन शिक्षा, कला एवं संस्कृति के समाज पर प्रभावों का अध्ययन किया गया है

परिकल्पना

1. मुगलकालीन शासन व्यवस्था सुदृढ़ एवं उन्नतिशील रही है।

2. मुगलकालीन शिक्षा, कला एवं संस्कृति के समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक सूचनाओं का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आकड़ो का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न संचार के साधनों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

1. मुगल शासन

बाबर मुगल साम्राज्य की नींव रखने वाला पहला शासक था। उन्होंने अपने अल्पकालिक शासन में कोई महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं कियाय क्योंकि वह संकट की स्थिति में सुशासन स्थापित करने में असमर्थ था। उनका प्रशासन हुमायूँ के बाद शेरशाह ने संभाला था। उनके प्रशासनिक सुधारों और प्रगतिशील रचनात्मक कार्यों के कारण, उनके शासन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उसके बाद अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब की शासन प्रणाली जारी रही। मुगल काल की मुख्य विशेषताएं हैं:-

1. मुगल शासन प्रणाली एक सैन्य स्वतंत्र, मनमानी प्रणाली थी। इस राजनीतिक शासन प्रणाली में सम्राट सबसे आगे था। उसकी इच्छा, अनिच्छा और विवेक शासन प्रणाली द्वारा निर्धारित किए गए थे। उसके पास वैधानिक रूप से असीमित शक्तियां थीं। जबकि अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ लोकप्रिय शासक थे, औरंगज़ेब एक मनमाना और अलोकप्रिय शासक था।

2. मुगल बादशाह को दैवीय हिस्सा माना जाता था।

3. मूल रूप से मुगल शासन की सेना। जहाँ मनसबदारी व्यवस्था प्रचलित थी। राज्य के उच्च अधिकारी, सार उनका वेतन, अधिकार और उपाधि तय की जाती थी।

4. मुगल शासन अरबी, ईरानी का भारतीय रूपांतरण था।

5. सूबेदार, मनसबदार, अधिकारी को दिए गए शाही आदेश, अधिसूचनाएं, फरमान लिखे गए। शासन के कार्य मौखिक नहीं थे।

6. इस्लामिक सिद्धांतों के अनुसार, शासन प्रणाली चलती थी। बादशाह खुद को खलीफा मानते थे। आपके सिक्के। पहले चार खलीफाओं का नाम मुहरों पर अंकित किया गया था, ताकि वे खुद को कानूनी रूप से मुस्लिम साबित कर सकें।

7. इस अवधि में, हिंदू काल से प्रचलित राजस्व प्रणाली और जमींदार प्रणाली थी।

8. मुगल काल में, लोक कल्याण कार्यों को इस कारण से उपेक्षित किया गया थाय क्योंकि सरकार के उच्च वर्गों ने अपनी सुविधाओं के लिए लोगों का शोषण किया। सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, व्यापार और व्यवसाय राज्य कर्तव्यों को नहीं माना जाता था। शेरशाह और अकबर ने सड़क व्यवस्था पर बहुत ध्यान दिया।

9. मुगल काल में कोई संहिताबद्ध कानून नहीं था। कानून और व्यवस्था इस्लाम कानून और सम्राट की इच्छा पर टिकी हुई थी।

10. एक समान शासन प्रणाली कायम रही। सरकारी कामकाज की भाषा फारसी थी।

11. अकबर की शासन नीति अधिक उदार और रचनात्मक थी। शांति, सहयोग, सहिष्णुता, समानता की भावना सभी धर्मों, वर्गों और जातियों के बीच थी। उन्होंने सर्व धर्म समभाव पर आधारित हिंदू-मुस्लिम समकालिक धर्म की स्थापना की।

12. इस अवधि में, केंद्र और प्रांतीय दो रूपों में शासन की व्यवस्था थी। साम्राज्य की राजधानी और केंद्र केंद्रीय शासन के तहत आगरा, दिल्ली में था। मुगल सम्राट,

www.ignited.in

मंत्री, विभिन्न विभाग, इसके अध्यक्ष, अधिकारी, सेना के न्यायाधीश थे। प्रांतीय शासन में, प्रांत के सूबेदार और अधीनस्थ अधिकारी थे।

13. सम्राट के विशेषाधिकारों में प्रमुख थे सिंहासन पर बैठना, झरोखा दर्शन, तस्लीम-ए-चौकी- मृत्यु और अंग भंग, हाथ युद्ध, डिग्री वितरण, मुद्रा और मुहर के चिन्ह, तशद्दन, पागल आम और विशेष बैठकें और रात की बैठकें। शामिल होना।

14. सम्राट के अधीन कुछ मंत्री थे, जिनमें वकील, वज़ीर आज़म, दीवाने अला, वक़ियानवीस, मीर बख्शी या अफसर ए. खज़ान, खान ए. समन थे, जो प्रशासन में सलाह, सहायता और सहायता के लिए विभिन्न समस्याओं पर अनुभवी प्रशासकों से परामर्श करते थे। ए सदरे जहाँ (पवित्र) व्यक्ति, क़ाज़ी उल कुजात (सुप्रीम कोर्ट), दरोगा, टोपखाना, दरोगा, तकसल, दरोगा-ए-किताबबखाना, मीर मुंशी प्रमुख थे।

15. सूबेदार का पूरा शासन सूबेदार पर था। प्रांतीय निधि का अधिकारी कोतवाल, फौजदार, शिकदार, काजी, फौतदार, कानूनगो, राजस्व अधिकारी के हाथों में था। गाँव संबंधी विकास के लिए ग्राम पंचायतें थीं।

16. इस्लामी कानून या शाहरशी कानून पारंपरिक कानून था। तीन प्रकार के अपराध थे. व्यक्तिगत अपराध/राजद्रोह/व्यक्तिगत अपराध के लिए पत्थर मारने, कोड़े मारने, कोड़े मारने, अंग परिवर्तन और मृत्यु दंड जैसे दंड।

2. मुगल युग के समाज पर प्रभाव

राजा और उनका परिवार समाज के सर्वोच्च स्थान पर थे। सम्राट का जीवन बहुत ही भव्य और भव्य था। बादशाहों के जन्मदिन, राज्याभिषेक, शादियों आदि को कीमती कपड़ों और गहनों से सजाया जाता था, जो बड़े धूम.धाम से मनाया जाता था, जिसमें लाखों और करोड़ों रुपये खर्च किए जाते थे। सम्राट के हरम (रनिवास) में, बेगमों के अलावा, विधिवत रूप से, कई नौकरानियां, सुंदरियां थीं। अकबर के महल में रातें थीं। सेवकों और सेवकों की सुंदरता, गुण, पद के अनुसार वेतन और काम थे। महान तमाशा और नियंत्रण के बाद भी, महल में भोग के लिए सुविधाएं थीं। इसका राजकोष पर भारी बोझ था। इसके अलावा, सरदार, अमीर, जागीरदार थे, जो शराब, वेश्यावृत्ति और राग के रंगों में डूबे हुए थे। उनमें संयम, शील और सत्यता का अभाव था। सामंती लोग साजिशों और साजिशों में फंस गए थे। भवन निर्माण में उनकी विशेष रुचि थी। सामंती प्रभुओं का अनुसरण व्यापारी वर्ग द्वारा किया जाता था। सामान्य व्यापारियों और छोटे दुकानदारों का दैनिक जीवन सरल था। समाज के अधिकांश लोग निम्न वर्ग के थे, जो किसान, मजदूर और कारीगर थे। झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले इस निम्न वर्ग की स्थिति अवर्शा और लगान के कारण काफी खराब थी। सरकारी कर्मचारी अवसर पाकर उनका शोषण करते थे। मनसबदार, उच्च अधिकारी और राजपूत राजा भी इस काल के शासन में थे। सैनिक और नागरिक थे। उनका खानपान, रहन-सहन और परंपराएँ विलासिता से भरी थीं। वे बेईमान, घूसखोर और भ्रष्टाचारी भी थे। सवर्णों और मुगल शासकों की कट्टरता के कारण, हिंदू समाज को डर में मुस्लिम धर्म अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। वर्ण व्यवस्था, वर्णाश्रम व्यावर्त हिंदू समाज में विकृत रूप में थी। अमीर मुगल दरबार में बहुत ही इज्जत से जाते थे। उन्होंने ब्रोकेड, रेशम और मलमल के समृद्ध और चमकदार वस्त्र पहने। सम्राटों ने विभिन्न प्रकार के कीमती वस्त्र और आभूषण पहने। जहाँगीर और हुमायूँ ने नए फैशन का आविष्कार किया। तिजोरियाँ और पगड़ी का उपयोग प्रचलित था। हिंदू पुरुषों, धोती-कुर्ता और महिलाओं ने घाघरा, साड़ी, अंगिया पहना। मुस्लिम पुरुषों ने अचकन और चूड़ीदार पजामा पहना था। सुरमा, महावर, मेहंदी, उबटन, सुगंधित तेल, सोने-चांदी के आभूषणों के साथ, स्वास्थ्य और सुंदरता के मामले में प्रचलित थे। मुगल काल के दौरान विभिन्न प्रकार के मनोरंजन उपलब्ध थे। खेल, त्योहार, त्योहार, मेले आयोजित किए गए। शिकार, शतरंज, चौपर और चौसर के खेल अमीर और गरीब द्वारा खेले जाते थे। ताश खेलना, कुश्ती, हाथी लड़ना, चौगान (पोलो) घुड़सवारी, कबूतर पालना, रथ दौड़, बकरियाँ और चीता, जादू टोना, आदि प्रसिद्ध थे। सामंती और समृद्ध लोग जुआ शराब और अफीम का सेवन करते थे। ऐसा कहा जाता है किरू बाबर का मीरा-गो-राउंड, अफीम की अफीम में हुमायूँ का संयम, शराब से प्रभावित अकबर की चंचलता, जहाँगीर की शराबबंदी उसके पतन का मुख्य कारण थी। हिंदू त्योहारों में शबे बी राट, ईद, मिलाद, ईद उल फितर, ईद उल जुहा, मुहर्रम पर दशहरा, दिवाली, होली, रामनवमी, शिवरात्रि, जन्माष्टमी और मुस्लिम त्योहार मनाए गए। जन्मदिन पर, दावत, नृत्य, संगीत, मेले, मीना बाज़ार का आयोजन किया गया। समाज में महिलाओं की स्थिति इतनी खराब थी कि उनका व्यक्तिगत सम्मान और प्रतिष्ठा खराब हो गई थी। उन्हें भोग के लिए मात्र सामग्री माना जाता था। सामान्य वर्ग की स्थिति अमीर वर्ग की तुलना में बहुत खराब थी। समाज में बुराइयाँ जैसे पुरदाह, बाल विवाह, बहुविवाह और सती प्रथा

www.ignited.in

थी। महिलाओं के बीच राजपूतों का उच्च स्थान था। इस युग की प्रसिद्ध महिलाओं में: गुलबदन बेगम। नूरजहाँ, ज़ेबुन्निसा, दुर्गावती, चाँदबीबी, रजिया, रोशनारा, जीजाबाई, ताराबाई आदि महिलाएँ थीं। समाज में दास प्रथा का प्रचलन था। हिंदुओं ने व्यभिचार से त्याग दिया।

3. आर्थिक स्थिति

मुगल आर्थिक स्थिति काफी समृद्ध थी। बादशाह अकबर के समय साम्राज्य का वार्षिक (13 दाहिना भाग चार विभाजित), शाहजहाँ के समय 22Cores करोड़, औरंगज़ेब के समय 38 श्रं करोड़। मुगल साम्राज्य की आय के साधन थे जकात कर, जजिया, निजी व्यापार से आय, लावारिस संपत्ति को जलाना, खनिज वस्तुओं पर कर, खमास, नमक और इंडिगो पर कर, राजाओं से उपहार और उपहार, कर लगाना। उस समय का सबसे बड़ा पेशा कृषि था। ढाक के मलमल, सूती वस्त्र उद्योग, कपड़े छपाई करने वाले शॉल, हाथी दांत, लकड़ी का काम, विदेशी व्यापार।

4. धार्मिक स्थिति

रामानंद, रामानुज, कबीर, चैतन्य जैसे हिंदू संतों के उदय के कारण इस्लाम की कट्टरता कम हो गई थी। सम्राट अपनी राजनीतिक आवश्यकताओं और समय की माँगों के कारण सहिष्णु और परोपकारी हो गए। अकबर ने दीन-ए-इलाही, नए धर्म का प्रतिपादन किया।

हिंदू धर्म दो संप्रदायों, सायवा और वैष्णववाद में विभाजित था। जैन धर्म, बौद्ध धर्म प्रचलित थे। औरंगजेब जैसे शासकों ने निर्दयतापूर्वक हिंदू और अन्य धर्मों के मंदिरों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया था। इस बीच, सिख धर्म का उदय हुआ, जिसमें गुरा रामदास, अगद, अमरदास, तेग बहादुर, गुरु गोविंद सिंह भी पैदा हुए। गुरु अर्जुन देव ने अमृतसर सरोवर में हरमंदर साहेब की स्थापना की।

जहाँगीर ने 10 मई, 1606 को गुरा अर्जुनदेव की हत्या कर दी। उनके बलिदान ने छक्कों में नई चेतना ला दी। गुरू गोविंद सिंह ने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की। जब उन्होंने औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीति की आलोचना की, तो उसकी हत्या कर दी गई। इस्लाम के अनुयायियों में से अधिकांश वे पहले हिंदू थे, जो किसी कारण से मुसलमान बन गए थे।

महदाबी आंदोलन, शिया सुन्नी वर्ग, दीन एक इलाही, सूफी वर्ग और चिश्ती, नक्शबंदिया, कादरिया संप्रदाय प्रमुख थे। अकबर को छोड़कर सभी शासक धार्मिक कट्टरपंथी नीति के पैरोकार थे। उन्होंने हिंदू मंदिरों और मूर्तियों को बेरहमी से नष्ट कर दिया। उन्होंने शियाओं को भी सताया।

5. मुगल काल के दौरान शिक्षा और साहित्य का विकास

यद्यपि मुगल काल के दौरान शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई थी, लेकिन मुगल शिक्षा नीति में लोगों को शिक्षित करना राजा का कर्तव्य नहीं माना जाता था। राज्य प्रशासन में शिक्षा का कोई विशेष प्रभाव नहीं था।

मुल्ला, मौलवियों, पुजारियों और उस्तादों द्वारा शिक्षा प्रदान की गई। मकतबों में प्राथमिक स्कूलों को पढ़ाया जाता था। मकतबों को आमतौर पर मस्जिदों में आयोजित किया जाता था। ढाई साल की उम्र में यहां मौखिक शिक्षा दी गई थी।

उच्च शिक्षा के लिए मदरसे थे, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों अध्ययन करते थे, जो अमीरों के अनुदान पर चलता था। यहां गणित, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, सामुद्रिक, तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र, इतिहास, प्राणीशास्त्र, रसायन विज्ञान आदि विषयों को पढ़ाया जाता था।

इस्लामिक वर्ग कुरान की टिप्पणियों के साथ संस्कृत, व्याकरण, साहित्य, न्याय, ज्योतिष आदि का अध्ययन करता था। मदरसों में अरबी भाषा में शिक्षा दी जाती थी। अकबर के पुस्तकालय में 24,000 ग्रंथ थे। अनुदान और शिष्यत्व दिया गया। बाबर खुद एक पढ़ा लिखा लेखक था। हुमायूँ और अकबर शौकीन प्रेमी थे। जहाँगीर एक अच्छे विद्वान और लेखक भी थे।

शाहजहाँ ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत काम किया। औरंगजेब ने शिक्षा के लिए कोई काम नहीं किया बल्कि हिंदुओं के स्कूल बंद कर दिए थे। बाबर से लेकर शाहजहाँ तक के सभी मुगल बादशाह मुगल काल में साहित्यकार थे। उन्होंने फारसी भाषा को आधिकारिक भाषा बनाया। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी लिखी, जो तुर्की में है, जिसका अनुवाद अचल रहमान खानखाना ने फारसी में किया है।

इस युग की दूसरी आत्मकथा तुजुक-ए-जहाँगीरी बादशाह जहाँगीर ने लिखी थी। तीसरी आत्मकथा अबुल फजल ने ऐन अकबरी लिखी। ये तीन आत्मकथाएँ नवीनता, सौंदर्य और शैली की नवीनता के लिए जानी जाती हैं। हुमायूँ को पुस्तकों का इतना शौक था कि उसने अपने महल में एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण किया।

उनकी अवधि के दौरान कई अन्य लोगों की रचना की गई थी, जिसमें खोंडमीर के हुमायुनामा, गुलबदन के हुमायुंनामा,

www.ignited.in

जौहर के ताजिकिश्तुल वाकियात, शेख बयाजित के हुमायूं को शामिल किया गया है। इस अवधि में फारसी में अनुवादित अन्य में महाभारत, रामायण, अथर्ववेद, लीलावती, राजतरंगिणी, नल दमयंती, कालिया दमन, बाइबिल, कुरान शामिल हैं। अनुवाद विभाग का नेतृत्व अबुल फजल कर रहे थे। ऐतिहासिक रूप से अनुवादित ग्रंथ और कवि, दूसरों के साथ, पादशाहनामा, शाहजहाँनामा प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

हिंदी साहित्य में, तुलसीदास ने रामचरितमानस, विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली, जयसी पद्मावत, केशवदास रामचंद्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रियाय भूषण ने छत्रसाल दशक, शिवबावनी, शिवराज भूषणय बिहारी सलाई, मीराबाई ने नरसीजी की महाआरती और पदावली लिखी। इसी तरह, बंगाली, गुजराती, मराठी, संस्कृत, पंजाबी, उर्दू में लिखित और सर्वश्रेष्ठ लिखित रचनाएं।

6. मुगलकाल में कला और संस्कृति का विकास

मुगल सम्राट कला और संस्कृति का प्रेमी था। विभिन्न कलाकृतियाँ, भवन निर्माण कला, चित्रकला आदि उनके कार्यों में परम चरमोत्कर्ष पा, जाते हैं। इस काल की वास्तुकला में भव्यता, मृदुता का लालित्य है।

बेल-बूटों के महीन मेहराब, फूल, पत्तियाँ और महीन कारीगरी पाई जाती हैं, जिनमें बाबर और हुमायूँ द्वारा निर्मित मस्जिद और मकबरा, शेरशाह का सासाराम का मकबरा, फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, जामा मरिदाद, मोती मरीज़ाद, लाल किला, कुतुब मीनार शामिल हैं। वास्तुकला के नमूने।

ईरान के साथ हिंदू-मुस्लिम की एक नई शैली इस अवधि की अनूठी पेंटिंग में विकसित हुई। चित्रकला ने अकबर बाबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान स्वर्णिम ऊँचाइयों को प्राप्त किया। जहाँगीर स्वयं एक महान चित्रकार था।

शाहजहाँ के शासनकाल में भी, नए मॉडल और रंगों के चित्र उनकी दिव्यता, सूक्ष्मता और जीवन की कहानी को बताते हैं। भौतिकवादी जीवन, जुलूस, उत्सव, शिकार और प्रकृति इन चित्रों में पाए जाते हैं। मुगल काल संगीत की दृष्टि से महान उपलब्धियों का काल रहा है। बाबर और हुमायूँ को संगीत से विशेष प्रेम था।

अकबर के दरबार में 36 गीतकार और संगीतकार थे, जिनमें बैजू बावरा, तानसेन प्रमुख थे। अकबर युग संगीत का स्वर्ण युग था। शाहजहाँ एक अच्छा गायक था। औरंगजेब को संगीत निकालने में आनंद की अनुभूति होती थी। इस काल में भरतनाट्यम, कथक, मणिपुरी और लोक नृत्य हुआ करते थे। वाद्ययंत्रों में सितार, वीणा, तबरा, सारंगी, पखावज, तबला, नक्कारा, ढोलक, बांसुरी थे।

निष्कर्ष

इस तरह, हम पाते हैं कि मुगल काल शिक्षा, साहित्य, कला और संस्कृति के मामले में सभ्यता की ऊंचाई थी, जबकि इसके नैतिक, सैन्य, विदेशी, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक कारणों से भी इसकी तेजी से गिरावट आई। हालांकि, यह कहना गलत नहीं होगा कि मुगल संस्कृति ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को काफी हद तक प्रभावित किया, जो उस युग का एक महान उपहार है। वास्तुकला और ललित कलाओं में मुगल संस्कृति के विकास और उदय को इसके अद्वितीय योगदान के कारण याद किया जाएगा।

संदर्भ सूची

1. वासुदेव शरण अग्रवाल: मुगल इंडिया, नई दिल्ली, 1969
2. वासुदेवचरण अग्रवाल: मुगल आर्ट एंड कल्चर, इलाहाबाद, 1976
3. सरला अग्रवाल: मुगल आर्ट फिलॉसफी, कामेश्वर प्रकाशन, बीकानेर, 1999
4. प्रो. पीके आचार्य: ए डिक्शनरी ऑफ हिंदू आर्किटेक्चर, वाराणसी
5. ईटी रिचमंड: मुस्लिम आर्किटेक्चर, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, 1926
6. शर्मा कालू राम: मध्यकालीन भारत का इतिहास, 2000
7. भगवतीशरण उपाध्याय: भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका, नई दिल्ली, 1991
8. भगवतीशरण उपाध्याय: मुगल काल का सांस्कृतिक इतिहास, लखनऊ, 1972
9. क्यू एचीसन; संधियों का एक संग्रह, सगाई और रविवार, खंड-2, 1932

www.ignited.in

10. जयशंकर मिश्र: प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2002

11. दामोदर धर्मानंद कोसांबी: प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002

12. रोमिला थापर: भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

13. विमल चंद्र पांडे: प्राचीन भारत का इतिहास (भाग-2), अभय प्रेस, मेरठ, 1987-88

Corresponding Author

Dr. Meena Ambesh*

Associate Professor, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in